समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ३.५०

लोक कल्याण सेतु

• प्रकाशन दिनांक : १५ सितम्बर २०१४ • वर्ष : १८ • अंक : ३ (निरंतर अंक : २०७)

मासिक समाचार पत्र

विभिन्न महिला संगठनों ने दिल्ली में विशाल 'नारी शक्ति मार्च' निकालकर निर्दोष पूज्य बापूजी की शीघ्र रिहाई की माँग की ।

३१ अगस्त अर्थात् काला दिवस

राष्ट्रहित में अपना पूरा जीवन न्योछावर करनेवाले ७५ वर्षीय पूज्य बापूजी को कष्टप्रद बीमारी होने के बावजूद, बिना किसी सबूत के कारागार में रखे हुए ३१ अगस्त को १ वर्ष पूरा हो गया । इस अन्याय एवं अत्याचार के विरोध में देश में अनेक स्थानों पर रैलियाँ एवं धरना-प्रदर्शन हुए ।

पूज्य बापूजी द्वारा प्रेरित 'योग व उच्च संस्कार शिक्षा कार्यक्रम'

विद्यालयों में बढ़ी इन कार्यक्रमों की माँग

पुणे

बड़ौदा

कैलिफोर्निया

बैंगलोर

परतवाड़ा, जि. अमरावती (महा.)

जोगपुर, जि. डूँगरपुर (राज.)

चांदखेड़ा-अहमदाबाद

करावल नगर-दिल्ली

अंजनगाँव सुर्जी, जि. अमरावती

गोंदिया (महा.)

राजनांदगाँव (छ.ग.)

हैदराबाद

मेघाणीनगर-अहमदाबाद

जबलपुर (म.प्र.)

पखांदना, अलीगढ़ (उ.प्र.)

वापी (गुज.), जौनपुर (उ.प्र.) तथा बलांगीर (ओड़िशा) में 'ज्योत से ज्योत जगाओ' सम्मेलन

जेलों में रक्षाबंधन कार्यक्रम द्वारा कैदी उत्थान

ग्वालियर (म.प्र.)

पाटण (गुज.)

यवतमाल (महा.)

सीहोर (म.प्र.)

हिम्मतनगर (गुज.)

बिलासपुर (हि.प्र.)

करेली, जि. नरसिंहपुर (म.प्र.)

आदिवासी उत्थान कार्यक्रम

लांबडिया, जि. साबरकांठा (गुज.) तथा पिपोदरा, जि. दाहोद (गुज.) में नि:शुल्क चिकित्सा शिविर

ग्वालियर (म.प्र.) तथा चिखला, जि. उदयपुर (राज.) में छाता वितरण

पालनपुर (गुज.) में शरबत-वितरण

रतननगर, जि. चुरू (राज.) में हर माह आटा-वितरण तथा ओंजल, जि. नवसारी (गुज.) में अनाज-वितरण

नानीमलु, जि. दाहोद में व्यसनमुक्ति कार्यक्रम तथा अभलोड, जि. दाहोद में संस्कार सिंचन कार्यक्रम

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

आश्रम, समितियाँ एवं साधक परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

लोक कल्याण सेतु

मासिक समाचार पत्र

(हिन्दी, गुजराती, मराठी व ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित)

वर्ष : १८ अंक : ३

भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २०७)

मूल्य : ₹ ३.५०

प्रकाशन दिनांक : १५ सितम्बर २०१४

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम

प्रकाशक और मुद्रक : राजेश बी. कारवानी

प्रकाशन-स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)

मुद्रण-स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५.

सम्पादक : सिद्धनाथ अग्रवाल

सदस्यता शुल्क :

भारत में : (१) वार्षिक : ₹ ३० (२) द्विवार्षिक : ₹ ५०
(३) पंचवार्षिक : ₹ ११० (४) आजीवन : ₹ ३००

विदेशों में : (१) पंचवार्षिक : *US$ 50*
(२) आजीवन : *US$ 125*

सम्पर्क पता : 'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-५ (गुज.)

फोन : (०७९) ३९८७७७३९/८८, २७५०५०१०/११.

★ *e-mail : lokkalyansetu@ashram.org*
⁂ *ashramindia@ashram.org*
★ *web-site : www.lokkalyansetu.org* ⁂ *www.ashram.org*

Opinions expressed in this news paper are not necessarily of the editorial board.
Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

'लोक कल्याण सेतु' के सदस्यों से निवेदन है कि कार्यालय के साथ पत्र-व्यवहार करते समय अपना रसीद क्रमांक और सदस्यता क्रमांक अवश्य लिखें।

इस अंक में...

ज्योतियों का पर्व : दीपावली ४
पुण्यदायी तिथियाँ ५
गुरु-प्रसाद का आदर ६
गुरुनाम का सहारा, व्यसनों से मुझे उबारा ७
विशेषज्ञों से समझें हकीकत... ७
गुरु-दर्शन की तड़प ९
भाव भरे श्रद्धा के सुमन (काव्य) ९
अभी भी समय है... १०
वृक्षासन १०
विद्यार्थियों की प्रतिभा निखारने का सुनहरा अवसर ११
सब सहते हुए भी संस्कृति-रक्षा में अडिग ! १२
विदेशों में बढ़ी देशी गायों की माँग १३
ब्रह्मज्ञान का उत्तम अधिकारी कौन ? १३
स्वास्थ्य रक्षक सरल प्रयोग १४
ठंडे तेल से सावधान ! १५
एक्यूप्रेशर के दो उपयोगी बिंदु १५
ज्यादा नमक हो सकता है जानलेवा १५
ऐसा लौह जो परदुःख में पिघलता था १६
संस्कृति की अनमोल धरोहर १६
कल्पना : तारक और मारक १८

टीवी चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

A2Z NEWS रोज सुबह ७-३० व रात्रि १० बजे

सुदर्शन NEWS रोज सुबह ६-३० बजे

मंगलमय www.ashram.org पर उपलब्ध

ज्योतियों का पर्व दीपावली

दीपावली पर्व : २१ से २५ अक्टूबर

दीपावली का पावन पर्व अंधकार में प्रकाश करने का पर्व है। यह ज्योतियों का पर्व हमें संदेश देता है कि हम अपने हृदय में अज्ञानरूपी अंधकार को मिटाकर ज्ञान का प्रकाश भरें।

भारतीय संस्कृति में सभी त्यौहारों में पर्वों का पुंज दीपावली शीर्ष स्थान पर है। और सब त्यौहार तो एक दिन के लिए आते हैं पर दीपावली ५ दिनों तक हमें आनंदित-उल्लसित करती है, प्रसन्नता बढ़ाती है।

पर्व का पहला दिन है **धनतेरस :** इस दिन भगवान धन्वंतरि का प्राकट्य हुआ था। इसलिए धनतेरस को उनका पूजन करके सभीके दीर्घ जीवन तथा आरोग्य-लाभ के लिए मंगल कामना की जाती है। इस दिन संध्या के समय घर के मुख्य द्वार के बाहर एक पात्र में अनाज रखें। उसके ऊपर आटे से बने हुए दीपक से यमराज के निमित्त दीपदान करने से अकाल मृत्यु नहीं होती। दीये का मुख दक्षिण दिशा की ओर होना चाहिए। इस दिन नये बर्तन खरीदना शुभ माना जाता है पर लोहे का बर्तन खरीदना वर्जित है (एल्युमीनियम के बर्तन हमेशा त्याज्य हैं)।

'पद्म पुराण' के अनुसार, 'धनतेरस से भाईदूज तक जो कुछ भी दान किया जाता है वह सब अक्षय एवं सभी कामनाओं को पूर्ण करनेवाला होता है।'

दूसरा दिन है **नरक चतुर्दशी :** इस चतुर्दशी को सभी तेलों में लक्ष्मीजी का और सभी जलों में गंगाजी का वास माना गया है। इस दिन तिल के तेल से मालिश एवं प्रातःस्नान विशेष फलदायी है। आज के दिन सूर्योदय के पहले स्नान करने से यमलोक नहीं देखना पड़ता। 'सनत्कुमार संहिता' एवं 'धर्मसिंधु' ग्रंथ के अनुसार जो नरक चतुर्दशी के दिन सूर्योदय के बाद स्नान करता है उसके शुभ कर्मों का नाश हो जाता है। इस दिन मंदिर, रसोईघर, गौशाला में व तुलसी, पीपल, आँवला आदि के नीचे विशेष रूप से दीपक जलाना चाहिए। इस दिन रात्रि में जागरण करके मंत्रजप करने से मंत्र सिद्ध होता है। रात्रि में सरसों के तेल या घी के दीये से काजल बनायें। इसको आँखों में आँजने से विशेष लाभ होता है।

तीसरा दिन है **दीपावली :** इस दिन प्रातःकाल स्नान के बाद इष्टदेव, गुरुदेव का पूजन करें। दीपावली के दिन ब्राह्ममुहूर्त में जो लक्ष्मीजी का पूजन करता है उसे धन-सम्पत्ति की कमी नहीं पड़ती। इस दिन पहले सात्त्विक ब्राह्मणों और भूखे मनुष्यों (अभावग्रस्तों) को भोजन कराकर बाद में स्वयं करना चाहिए।

रात्रि को गुरु वंदना, गणेश वंदना तथा सरस्वती वंदना करके लक्ष्मीजी का पूजन प्रारम्भ करना चाहिए। पूजन के लिए १३ या २६ दीपकों के बीच चौमुखा दीपक जलायें। पूजा के बाद दीपकों को घर के मुख्य-मुख्य स्थानों पर रखें। चौमुखा दीपक रातभर जले ऐसी व्यवस्था करनी चाहिए।

दीपावली की रात्रि चार महारात्रियों में से एक है। यह जप-ध्यान के लिए बहुत ही उत्तम होती है। अतः रात्रि-जागरण करके परमात्मप्राप्ति के उद्देश्य से 'ॐ' अथवा तो गुरुमंत्र का अधिक-से-अधिक जप करना चाहिए, ॐकार व गुरुमंत्र के अर्थ में एकाकार होते जाना चाहिए। स्वास्थ्य-मंत्र या लक्ष्मीप्राप्ति के मंत्र का भी जप कर सकते हैं।

लक्ष्मीजी कहती हैं : ''जो व्यक्ति अक्रोधी, भक्त, कृतज्ञ, क्षमाशील, जितेन्द्रिय तथा सत्त्व-सम्पन्न होते हैं, जो स्वभावतः निज धर्म, कर्तव्य तथा सदाचार में सतर्कतापूर्वक तत्पर होते हैं और धर्मज्ञ व गुरुजनों की सेवा में सतत लगे रहते हैं तथा इसी प्रकार जो स्त्रियाँ शीलवती, पतिपरायणा, सद्गुणसम्पन्ना, सबका मंगल चाहनेवाली होती हैं, उनके यहाँ मैं सतत निवास करती हूँ।

जो व्यक्ति नास्तिक, अकर्मण्य, कृतघ्न, चोर तथा गुरुजनों के दोष देखनेवाला होता है, उसके यहाँ मैं (लक्ष्मी) निवास नहीं करती।''

(महाभारत, अनुशासन पर्व - दानधर्म पर्व)

चौथा दिन है **नूतन वर्ष (बलि प्रतिपदा) :** इस दिन कोई भी शुभ कर्म करने के लिए शुभ मुहूर्त देखने की आवश्यकता नहीं होती, यह सर्व कार्य सिद्ध करनेवाला मुहूर्त है। इस दिन संत-महापुरुषों एवं पुण्यमय वस्तुओं का दर्शन करना चाहिए, जैसे - सोना, चाँदी, सद्ग्रंथ, मंगल कलश, गौमाता, पाँचों गौरस आदि।

प्रतिपदा के दिन

प्रातःकाल गोवर्धन की पूजा होती है एवं गायों को सजाया जाता है। इस दिन गायों का दूध नहीं दुहना चाहिए। प्राचीनकाल में हिंसक लोग बड़ी क्रूरता से पशुओं की हिंसा करने लगे थे, अतः इसी दिन से भगवान श्रीकृष्ण ने गायों की एवं गोवर्धन की पूजा प्रारम्भ की। पूज्य बापूजी कहते हैं : ''इस दिन जो मनुष्य हर्ष में रहता है, उसका पूरा वर्ष हर्ष में बीतता है और जो शोक में रहता है, उसका पूरा वर्ष शोक में ही व्यतीत होता है। वर्ष का प्रथम दिन इस प्रकार से आरम्भ करना कि पूरा वर्ष भगवन्नाम-जप में, भगवान के ध्यान में, भगवान के चिंतन में बीते। पुराने वैरभाव को भूल जायें एवं फिर से स्नेह का झरना बहने दें। भूतकाल के अंधकार को अलविदा कह दें और नूतन वर्ष के नवप्रभात का स्वागत करें। नया वर्ष है, नये उत्साह, नवीन साहस, नूतन उल्लास से अपने कार्य में जुट जायें।''

पाँचवाँ दिन है भाईदूज : यह पर्व परस्पर सद्भावना बढ़ाने का संदेश देता है। इस दिन जो भाई अपनी बहन के हाथ का भोजन करता है, उसे यमदंड से मुक्ति मिल जाती है।

दीपावली पर पूज्य बापूजी का संदेश

पूज्य बापूजी कहते हैं : (शेष पृष्ठ १७ पर)

पुण्यदायी तिथियाँ

७ अक्टूबर — शरद पूर्णिमा (इस रात्रि में चन्द्रमा की चाँदनी में ध्यान-भजन, सत्संग, कीर्तन एवं चन्द्रदर्शन आदि शारीरिक व मानसिक आरोग्य के लिए अत्यंत लाभदायक हैं।) (विस्तृत जानकारी के लिए पढ़ें : ऋषि प्रसाद, सितम्बर २०१४, पृष्ठ १४)

८ अक्टूबर — खग्रास चन्द्रग्रहण (ग्रहण समय : दोपहर २-४४ से शाम ६-०५ तक) (चन्द्रग्रहण में किया गया पुण्यकर्म (जप, ध्यान, दान आदि) एक लाख गुना फलदायी होता है। ग्रहण के समय पालनीय आवश्यक नियमों की जानकारी के लिए पढ़ें : आश्रम द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'क्या करें, क्या न करें ?') (जयपुर छोड़ के बाकी के राजस्थान में और गुजरात एवं मुंबई में ग्रहण के नियमों का पालन आवश्यक नहीं है। शेष सभी स्थानों में नियम पालनीय हैं।)

८ अक्टूबर से **६ नवम्बर** — कार्तिक व्रत (विस्तृत जानकारी के लिए पढ़ें : ऋषि प्रसाद, सितम्बर २०१४, पृष्ठ १२)

१५ अक्टूबर — बुधवारी अष्टमी (दोपहर ११-४६ से १६ अक्टूबर सूर्योदय तक)

१६ अक्टूबर — गुरुपुष्यामृत योग (सुबह १०-४७ से १७ अक्टूबर सूर्योदय तक)

१७ अक्टूबर — संक्रांति (पुण्यकाल : दोपहर २-१२ से सूर्यास्त तक)

१९ अक्टूबर — रमा एकादशी (बड़े-बड़े पापों को हरनेवाला, चिंतामणि तथा कामधेनु के समान सब मनोरथों को पूर्ण करनेवाला व्रत)

९ सितम्बर — दीपावली (विस्तृत जानकारी हेतु पढ़ें इसी अंक का पृष्ठ ३)

२१ अक्टूबर से **२५ अक्टूबर** — गोपाष्टमी (इस दिन गायों को गोग्रास देकर उनकी परिक्रमा करें और थोड़ी दूर तक उनके साथ जायें तो सब प्रकार की अभीष्ट सिद्धि होती है।)

१ नवम्बर — ब्रह्मलीन भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज महानिर्वाण दिवस, अक्षय-आँवला नवमी (जप-ध्यान, दान, तर्पण आदि पुण्यकर्म का अक्षय फल होता है। इस दिन आँवले के वृक्ष के पूजन का विशेष माहात्म्य है।) (विस्तृत जानकारी के लिए पढ़ें : ऋषि प्रसाद, अक्टूबर २०१३, पृष्ठ २६)

दीपावली का पर्व प्रेरणा देता है कि अज्ञानरूपी अंधकार में भटकने के बजाय अपने जीवन में ज्ञान का प्रकाश ले आओ।

गुरु-प्रसाद का आदर

देवशर्मा नामक ब्राह्मण ने गुरुकुल में पढ़-लिखकर घर लौटते समय गुरुदेव के चरणों में प्रणाम करके दक्षिणा रखी। गुरु ने कहा : ''बेटा ! तूने गुरु-आश्रम में बहुत सेवा की है और तू गरीब ब्राह्मण है, तेरी दक्षिणा मुझे नहीं चाहिए।''

देवशर्मा : ''गुरुदेव ! कुछ-न-कुछ तो देने दीजिये। मेरा कर्तव्य निभाने के लिए ही सही, कुछ तो आपके चरणों में रखने दीजिये।''

शिष्य की श्रद्धा को देखकर गुरुदेव ने दक्षिणा स्वीकार कर ली और कुछ प्रसाद देना चाहा। दूसरा तो उनके पास कुछ था नहीं अतः प्रसन्न होकर अपनी छाती का एक बाल तोड़कर दे दिया और बोले : ''ले जा, बेटा ! खाली हाथ क्यों जायेगा ?''

गुरु जब प्रसाद देते हैं तो उसमें उनका संकल्प होता है। देवशर्मा समझदार था। उसने बड़े ही आदर से गुरुदेव का प्रसाद स्वीकार किया एवं घर जाकर एक चाँदी की डिब्बी में रखकर रोज उसकी पूजा-आराधना करने लगा।

देवशर्मा पढ़कर शास्त्री बना था एवं कर्मकांडी था अतः उसने कर्मकांड द्वारा अपनी आजीविका शुरू की। जिनका मुहूर्त निकालता, शादी कराता उन्हें लाभ-ही-लाभ होता। धीरे-धीरे गाँव के सब ब्राह्मणों का धंधा मंदा होने लगा और देवशर्मा के ग्राहक बढ़ते गये। ऐसा करते-करते देवशर्मा धन-वैभव से सम्पन्न हो गया। एक दिन एक कर्मकांडी विद्वान युवक ने कहा : ''देवशर्मा ! तुम जितना पढ़े हो उससे तो मैं ज्यादा पढ़ा हुआ हूँ, दूसरे कई ब्राह्मण भी ज्यादा पढ़े हुए हैं फिर भी हम सब केवल मक्खियाँ उड़ाते रहते हैं और तुम मालामाल होते जा रहे हो ! तुम्हारे पास समय नहीं होता तो भी लोग तुम्हारा इंतजार करते हैं एवं तुम्हारे कथनानुसार ही अपना समय निर्धारित करते हैं। आखिर इसका रहस्य क्या है ?''

देवशर्मा ने बड़ी सरलता से कह दिया : ''जब मैं गुरुकुल से पढ़ाई पूरी करके आ रहा था, उस समय मेरे गुरुदेव ने प्रसन्न होकर अपनी छाती का एक बाल मुझे प्रसादरूप में दिया था। वह बाल, मैं समझता हूँ मेरे गुरुदेव की कृपा ही है। मैंने चाँदी की डिब्बी में उस बाल को रखा है। रोज प्राणायाम, जप, ध्यान आदि के बाद उस गुरु-प्रसाद का दर्शन करके फिर मैं अपने कार्य का आरम्भ करता हूँ।''

पूछनेवाला वह युवक भी पहुँचा उन गुरु के पास और बोला : ''गुरुजी ! गुरुजी !! हमारा धंधा बहुत मंदा चलता है। आपकी छाती का एक बाल दे दो न !''

गुरु ने कहा : ''बेटा ! वह केवल बाल का चमत्कार नहीं है। उस देवशर्मा का आचरण ऐसा बढ़िया था कि मैंने प्रसन्न होकर बाल दे दिया तो उसका काम बन गया। उसने सेवा से मेरा हृदय जीत लिया था।''

''मैं भी सेवा करने को तैयार हूँ। बस, आप अपनी छाती का बाल दे दीजिये।''

गुरुजी ने कहा : ''नहीं देता।''

परंतु वह न माना। बोला : ''मैं भी आपकी सेवा करूँगा।''

उस युवक ने एकाध दिन और गुजारा कि शायद गुरुजी राजी हो जायें किंतु गुरु भला कब दिखावटी सेवा से राजी होते हैं !

गुरु की सेवा करो तो सच्चे हृदय से। गुरु से प्रेम करो तो सरल हृदय से। निःस्वार्थ होकर, निरहंकार होकर प्रेम करो तो गुरु के हृदय से भी प्रेम के आंदोलन बरसेंगे और तुम्हारे अंदर छुपा हुआ ईश्वरीय प्रेम का दरिया उमड़ पड़ेगा... तुम निहाल हो जाओगे !

किंतु उस ब्राह्मण को इस बात का पता न था। उसे तो केवल इतना ही मालूम था कि छाती के बाल के चमत्कार से देवशर्मा का धंधा चमक रहा है। उसने पुनः गुरु से बाल माँगा।

गुरु ने इनकार करते हुए कह दिया : ''जा तू यहाँ से !'' अब उस ब्राह्मण को हुआ कि 'गुरु कोई बाल-वाल देनेवाले नहीं हैं। किंतु मैं कुछ भी करके उनका बाल जरूर ले

(शेष पृष्ठ १७ पर)

गुरुनाम का सहारा, व्यसनों से मुझे उबारा

पूज्य बापूजी से मंत्रदीक्षा लेने के बाद मैं रोज नियम से जप आदि करता था, जिससे सब कुछ ठीक चल रहा था। बाद में कुसंग में पड़कर मैंने नियम छोड़ दिया। वहाँ से मेरा पतन शुरू हो गया। मैं मांस-मछली खाने लगा व शराब आदि का व्यसन करने लगा, जिससे मेरी बुद्धि क्षीण हो गयी। मैं घर में चोरी भी करने लगा। घरवालों का समझाना उलटा लगने लगा। मेरा स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया। मैं सबसे झगड़ा करने लगा। परिणाम यह हुआ कि ९वीं कक्षा में मैं फेल हो गया।

गुरुकृपा से एक दिन मैं सत्संग में पहुँच गया। वहाँ पर मैंने बापूजी के दर्शन किये तो अंदर से आवाज आयी कि 'बेटा ! तेरा जीवन बरबाद हो रहा है, तू समय को यूँ ही मत गँवा।' इन शब्दों ने मुझे झकझोरकर रख दिया। मैंने फिर से जप-ध्यान तथा सत्संग सुनना शुरू कर दिया। व्यसन व कुसंगति छूट गयी और मैं 'युवा सेवा संघ' से जुड़कर परहित के कार्यों में लग गया।

अब मैं पढ़ाई और नौकरी करते हुए भी जप-ध्यान, सत्संग-श्रवण आदि नियमित करता हूँ। अगर बापूजी न बचाते तो आज मैं कहाँ और किस हाल में होता यह सोचकर मेरी आँखें भर आती हैं। मुझे गर्व है कि मैं परम पूज्य बापूजी का शिष्य हूँ ! मेरी सभी साधकों से प्रार्थना है कि आप कितने भी व्यस्त हों पर पूज्य बापूजी द्वारा दीक्षा के समय दिये गये मंत्रजप, सत्संग-श्रवण आदि नियमों को पक्का रखें। जिन बापूजी ने मेरे जैसे असंख्य युवाओं को दुर्व्यसनों से मुक्त करके सन्मार्ग पर लगाया, वे कितने निष्पाप, निर्मल और महान होंगे !

- प्रवीन कुमार जोशिया, शाहदरा, दिल्ली
मो. : ९५८२८४६१२६

★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★

सत्य के आगे अपने यश या धन का घात हो जाय तो परवाह नहीं लेकिन सत्य का घात नहीं होना चाहिए। जो सत्य का घात नहीं करता है, सत्य उसका भी घात नहीं होने देता है।

- पूज्य बापूजी

विशेषज्ञों से समझें हकीकत...

निर्दोष लोगों को फँसाने के लिए बलात्कार के नये कानूनों का व्यापक स्तर पर किया जा रहा दुरुपयोग आज समाज के लिए एक चिंतनीय विषय बन गया है। अपने स्वार्थी उद्देश्यों की पूर्ति के लिए बालिग, नाबालिग लड़कियों एवं महिलाओं को मोहरा बना के दर्ज किये गये बलात्कार के झूठे मामले बड़ी संख्या में सामने आ रहे हैं। राष्ट्रहित में क्रांतिकारी पहल करनेवाली सुप्रतिष्ठित हस्तियों, संतों-महापुरुषों एवं समाज के आगेवानों को फँसाने के लिए राष्ट्र एवं संस्कृति विरोधी ताकतों द्वारा कूटनीतिपूर्वक इन कानूनों का दुरुपयोग हथियार के रूप में किया जा रहा है। इसी तरह के एक अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्र के तहत पूज्य बापूजी को फँसाया गया है।

आइये जानते हैं इस बारे में कानून-विशेषज्ञों व इस विषय के जानकारों का मत :

भारतीय आतंकवाद विरोधी मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष, अधिवक्ता वीरेश शांडिल्य कहते हैं : ''इस कानून की चपेट में संत-समाज, राजनेता, सरकारी अधिकारी, सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश और आम आदमी - सभी हैं। यौन-शोषण की धारा का अब हथियार की तरह इस्तेमाल होने लगा है, जो समाज के लिए अच्छे संकेत नहीं हैं। इससे तो देश में अराजकता का माहौल पैदा हो जायेगा।''

जोधपुर मामले में पूज्य बापूजी पर लगाये गये आरोप के संदर्भ में तथाकथित घटना के बाद एफआईआर दर्ज करवाने में हुए विलम्ब को साजिश करार देते हुए **पटना हाईकोर्ट की अधिवक्त्री श्रीमती सुमन सिंह** कहती हैं : ''कानून में यह माना गया है कि अगर एफआईआर उसी दिन नहीं होती है तो ये चीज संदेहास्पद है। आप शहर में थे और आपने ५ दिन लगा दिये ? यानी आपके पीछे तंत्र काम कर रहा है बापू को फँसाने के लिए।''

इसी मामले के कुछ और पहलुओं को उजागर करते हुए **वरिष्ठ अधिवक्ता श्री महेश बोडा** कहते हैं : ''दिल्ली में रात के २-४५ बजे लड़की की रिपोर्ट लिखायी गयी जबकि वहाँ का कोई न्याय अधिकार क्षेत्र नहीं बनता है। उसके बावजूद भी उसकी रिपोर्ट लिखी, मेडिकल कराया, बयान लिया और फिर उसको जोधपुर भेजा गया। ऐसा मैंने पहली बार देखा है।''

पूज्य बापूजी के केस में लड़की का मेडिकल

किन्हीं सच्चे सद्गुरु के सान्निध्य में अमर आत्मा का अनुभव कर लेना ही मनुष्य-जीवन का वास्तविक कर्तव्य है।

करनेवाली दिल्ली के **लोकनायक अस्पताल की गायनेकोलॉजिस्ट डॉ. शैलजा वर्मा** ने अदालत में दिये बयान में स्पष्ट रूप से कहा कि ''मेडिकल के दौरान लड़की के शरीर पर रत्तीभर भी खरोंच या चोट के निशान नहीं थे और न ही प्रतिरोध के कोई निशान थे। लड़की का हाईमन इनटैक्ट (ज्यों-का-त्यों) पाया गया था।''

बलात्कार के मामलों में पुलिस की भूमिका पर टिप्पणी करते हुए **अधिवक्ता वीरेश शांडिल्य** कहते हैं : ''यौन-शोषण व बलात्कार केस में झूठी जाँच करनेवाले पुलिस अधिकारियों को बर्खास्त करने का कानून बने क्योंकि पुलिस की मिलीभगत के बिना रेप व यौन-शोषण के झूठे आरोप नहीं लगाये जा सकते।''

एक लड़की द्वारा लगाये गये झूठे मामले में आरोपियों को बरी करते हुए **दिल्ली फास्ट ट्रैक कोर्ट के अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश वीरेन्द्र भट्ट** ने कहा कि ''यह बहुत अफसोसजनक है कि एक रुझान चल निकला है जिसमें जाँच अधिकारी अपने फर्ज और जिम्मेदारियों को पूरी तरह धता बताते हुए बलात्कार की शिकायत करनेवाली लड़की के इशारे पर नाचते हैं।''

अदालत ने यह भी आदेश दिया कि उसके फैसले की प्रतियाँ दिल्ली पुलिस कमिश्नर और अन्य को भेजी जाय ताकि लड़की के बयान को अकाट्य सत्य करार दिये बगैर खुले दिमाग से ऐसे मामलों की जाँच करने के लिए पुलिस अधिकारियों को संवेदनशील बनाने और प्रशिक्षित करने की दिशा में प्रयास किये जायें।

पूज्य बापूजी पर तथाकथित आरोप लगानेवाली लड़की के हाव-भाव व मनःस्थिति को संदेहास्पद बताते हुए **गायनेकोलॉजिस्ट डॉ. माला इंगले** कहती हैं : ''एक स्त्री-विशेषज्ञ होने के कारण मेरे पास भी बलात्कार व यौन-शोषण के कई केस आते हैं। आमतौर पर ऐसे केसों में लड़की व उसके माँ-बाप तो डरे-डरे से, गहरी पीड़ा व सदमे से भरे होते हैं मगर ऐसा केस मैंने आज तक कभी देखा-सुना नहीं है कि लड़की के साथ ऐसी घटना घटे और लड़की सबके साथ हँसे-बोले, फिर ५ दिन बाद शिकायत करे।''

बापूजी के मामले में आरोपकर्ता लड़की की उम्र के विषय में एक महत्त्वपूर्ण तथ्य बताते हुए **वरिष्ठ पत्रकार श्री अरुण रामतीर्थकर** ने कहा कि ''जहाँ लड़की पढ़ती थी उस श्री शंकर मुमुक्षु विद्यापीठ एवं लड़की की जीवन बीमा पॉलिसी में दर्ज जन्मतिथि के अनुसार तथाकथित आरोप के अंतर्गत कहे गये दिन वह लड़की बालिग थी। इस तथ्य को मिले कई महीने हो गये हैं लेकिन अभी तक पॉक्सो एक्ट नहीं हटाया गया है। प्राप्त दस्तावेजों की जाँच एवं वैद्यकीय परीक्षण करके लड़की की सही उम्र सामने लायी जानी चाहिए।''

बलात्कार के मामलों में लम्बे अंतराल के बाद आरोप लगानेवालों पर प्रश्नचिह्न लगाते हुए शिवसेना के मुखपत्र 'सामना' के सम्पादकीय में लिखा गया : 'कोई भी महिला यह कलंक क्षणभर भी बर्दाश्त नहीं कर सकती। लेकिन इन दिनों बलात्कार का आरोप तथा शिकायत (तथाकथित) घटना घटित होने के छः-छः महीने और दो-दो साल के बाद दाखिल की जाती है। इन पर कोई भी सवाल नहीं उठाता।'

पूज्य बापूजी एवं श्री नारायण साँईं पर सूरत की दो महिलाओं द्वारा गढ़ी गयी १२-१२, ११-११ साल पुरानी तथाकथित घटनाओं के आधार पर जिस प्रकार मामला दर्ज किया गया, उसे कानून की तौहीन बताते हुए **वरिष्ठ अधिवक्ता श्री बी.एम. गुप्ता** कहते हैं : ''जब भी कोई शिकायत दर्ज हो तो पुलिस का कानूनी कर्तव्य है कि उसकी प्राथमिक जाँच करे। उसमें प्रथम दृष्ट्या सबूत मिलें तो गुनाह दर्ज करना चाहिए। यह अन्य अदालतों का भी निर्णय है। लेकिन संत आशारामजी बापू के केस में कोई भी प्राथमिक पूछताछ किये बिना सीधे गुनाह दर्ज हुआ है। यह कानून की तौहीन है।''

अधिवक्ता अविनाश सिरपुरकर कहते हैं : ''अभी स्थिति यह है कि सालों पुरानी बलात्कार की घटना का हवाला देकर केस दर्ज हो रहे हैं। ऐसे मामलों की जाँच का कोई ठोस आधार नहीं होता। मामले में अगर आरोपी बरी भी हो जाय तो उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा जो धूमिल हुई है वह वापस नहीं आ सकती। संबंधित व्यक्ति को मानसिक प्रताड़ना से भी गुजरना पड़ता है। ऐसे मामलों में गहन जाँच होनी चाहिए और साक्ष्य पाये जाने के बाद ही केस दर्ज किया जाना चाहिए।''

किसी व्यक्ति को केवल आरोपों के आधार पर लम्बे समय तक जेल में रखे जाने के विषय में अधिवक्ता अजय गुप्ता कहते हैं : ''किस आरोपी को जमानत दी जाय किसे नहीं, यह न्यायालय के विवेक का विषय है लेकिन इतना जरूर है कि ट्रायल के दौरान आरोपी को जेल में रखना समय पूर्व सजा देने से कम नहीं है।''

(संकलक : श्री ऋषभ शेहरावत)

भाव भरे श्रद्धा के सुमन

माँ महँगीबा को अर्पित हैं,
ये भाव भरे श्रद्धा के सुमन ।
माँ तेरे पावन चरणों में,
शत बार नमन, अगणित वंदन ॥
माँ तेरी पावन स्मृति से,
फिर हृदय हमारे हरषे हैं ।
माँ महँगीबा, प्यारी अम्मा,
नयनों से मोती बरसे हैं ॥
नयनों के जल से माँ तुमको,
श्रद्धांजलि अर्पित करते हम । माँ तेरे पावन...
शीतल छाया के जो तरुवर,
शीतल जल के जो निर्झर हैं ।
वे लाल लाड़ले आपके माँ,
हम सबके प्यारे गुरुवर हैं ॥
माँ तूने दिया रतन ऐसा,
किस विधि आभार जतायें हम । माँ तेरे पावन...
करुणासागर की जननी तुम,
करुणा की सागर थीं माँ ।
कैसे तेरा गुणगान करें,
गुण-ज्ञान की आगर[1] थीं तुम माँ ॥
साँईं की प्यारी 'जीजल माँ'[2] को,
कोटि नमन ! शत कोटि नमन ! माँ तेरे पावन...
जीवन-पथ पर चलना जो,
आज सिखाते हैं हमको ।
उँगली पकड़कर चलना,
तुमने ही सिखाया था उनको ॥
करना सिखलाया ध्यान-भजन,
नर में से हुए वे नारायण । माँ तेरे पावन...
सेवा, सहिष्णुता, त्यागमूर्ति,
माँ अनुपम था जीवन तेरा ।
गुरुरूप में सुत को स्वीकारा,
कैसा था दिव्य भाव तेरा ॥
तेरे गुरुप्रेम की बलिहारी,
अद्भुत था गुरुआज्ञा पालन । माँ तेरे पावन...

– प्रियंका यादव, अहमदाबाद

१. भंडार २. प्यारी, मधुमयी माँ

गुरु-दर्शन की तड़प

ब्रह्मलीन मातुश्री श्री माँ महँगीबाजी का महानिर्वाण दिवस १९ अक्टूबर

ब्रह्मलीन अम्मा के जीवन में पूज्य बापूजी के प्रति गुरुभाव, भगवद्भाव, निष्ठा व प्रीति लाबयान थी।

एक बार अम्माजी अहमदाबाद में पूज्यश्री का कोई विडियो देख रही थीं। उसमें बापूजी के कुर्ते का ऊपरी बटन टूटा हुआ था। था तो विडियो परंतु अम्मा की ऐसी तन्मयता थी जैसे पूज्यश्री उनके सामने प्रत्यक्ष बैठे सत्संग कर रहे हों। उन्होंने सेवक से कहा : ''साँईं जब कुर्ता उतारें तो वह ला देना, मैं बटन लगा दूँगी।''

कई बार अम्मा के लिए बापूजी की दूरी असहनीय हो जाती। वे जल बिन मछली की तरह विह्वल हो जातीं। एक बार अम्मा हिम्मतनगर (गुजरात) में थीं और बापूजी सत्संग हेतु हरिद्वार गये थे। दो दिन तो अम्माजी को बापूजी की अनुपस्थिति में भी साकार दर्शन हुए किंतु तीसरे दिन उनको ऐसा लगा कि बापूजी उनसे नहीं मिले। तो अम्मा उन्हें पुकार-पुकारकर रोने लगीं : ''साँईं तो कहते हैं कि 'ओ मेरी जीजल (मधुमयी) अम्मा ! आप जहाँ भी होंगी, मैं आपको ढूँढ़ निकालूँगा।' फिर अब मिलने क्यों नहीं आते हैं ?''

अम्मा जोर-जोर से रोते हुए कहने लगीं : ''आज-के-आज मुझे साँईं के पास ले चलो या साँईं को यहाँ बुलाओ, नहीं तो मैं मर जाऊँगी !''

अम्मा की विरह-व्यथा सीमा पार कर रही थी कि इतने में अंतर्यामी पूज्य बापूजी ने फोन द्वारा संदेश भिजवाया कि 'अम्मा वहाँ से अहमदाबाद के लिए निकलें, हम भी पहुँच रहे हैं।'

अहमदाबाद में अपने प्यारे साँईं के दर्शन कर अम्मा निहाल हो गयीं। गजब थी अम्मा की गुरुभक्ति ! इतिहास भी अपने अध्यायों में ऐसा चरित्र पाकर स्वयं को धन्य मानता होगा !

जिनके जीवन में सद्गुरु का आदर नहीं अथवा जो गुरु से कपट करते हैं, उनके पुण्य और शांति नष्ट हो जाते हैं।

अभी भी समय है...

अथर्ववेद (५.१९.६) में आता है :

उग्रो राजा मन्यमानो ब्राह्मणं यो जिघत्सति ।
परा तत् सिच्यते राष्ट्रं ब्राह्मणो यत्र जीयते ॥

अर्थात् जिस राष्ट्र में ब्रह्मज्ञानियों को, वेदवेत्ताओं को सताया जाता हो, वह राज्य ज्ञानहीन होकर नष्ट हो जाता है।

ब्राह्मणों की (ब्रह्म में विचरण करनेवाले महापुरुषों, ज्ञानवानों की), विद्वानों (वेदों के रहस्य को जाननेवालों) की, ऋषियों की नजर बड़ी तेज और पैनी होती है। वे दूरदर्शी होते हैं, समय की नब्ज को जानते हैं और समाज के दोष-दुर्गुणों को दूर करने के लिए सदैव प्रयासरत रहते हैं। वे देश के नागरिकों को चरित्रवान, संस्कारवान व ज्ञानवान बनाने के लिए सतत संघर्ष करते रहते हैं।

जैसे एक सूर्य सारे अंधकार को नष्ट कर देता है, उसी प्रकार ज्ञानवानों द्वारा फैलाया गया ज्ञान समाज में व्याप्त अज्ञान, कुरीतियों व कुविचारों को नष्ट कर देता है। समाज को ऐसे योग्य व्यक्तियों का सम्मान करना चाहिए, उनका आभार मानना चाहिए। जैसे नारदजी, जो ऋषि-परम्परा के प्रतिनिधि हैं, कष्ट उठाकर भी समाज में व्याप्त समस्याओं व कुरीतियों का निवारण करने में लगे रहते हैं। ऐसे योग्य और विद्वान व्यक्ति जो सबको दोष, दुर्गुणों से सतर्क करके उन्हें सन्मार्ग पर चलने का प्रकाश देते हैं, सदैव ही सम्मान के पात्र समझे जाते हैं।

परंतु आज धर्म की, राष्ट्रीयता की, ज्ञान की या सदाचार की कोई बात कहता है तो उसीको प्रताड़ित करके अपमानित किया जाता है। इसका ही परिणाम है कि चारों ओर अज्ञान का धुआँ फैल गया है। लोगों की सत्य और असत्य में भेद करने की विवेक-बुद्धि भी समाप्त होती जा रही है और राष्ट्र पुनः गुलामी के मार्ग पर बढ़कर नष्ट होने की स्थिति में आ रहा है।

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूजनीयो न पूज्यते ।
त्रीणि तत्र प्रवर्तन्ते दुर्भिक्षं मरणं भयम् ॥

(स्कंद पुराण, मा. के. : ३.४५)

अपूज्या यत्र पूज्यन्ते पूजनीयो न पूज्यते ।
त्रीणि तत्र भविष्यन्ति दारिद्र्यं मरणं भयम् ॥

(शिवपुराण, रुद्र. सती. : ३५.९)

जहाँ पूजनीय लोगों का सम्मान नहीं होता और असम्माननीय लोग सम्मानित होते हैं, वहाँ भय, मृत्यु, अकाल, दरिद्रता, शोक तांडव करते हैं। जैसे सद्दाम व लादेन का सम्मान और महात्मा बुद्ध की मूर्तियों का अपमान हुआ तो उन देशों में भय, शोक, बमबारी, लड़ाई, झगड़े, नरसंहार रुकने का नाम ही नहीं लेते। श्रेष्ठ जनों का अपमान, अवहेलना आबादी को बरबादी में बदलते हैं।

आज ईमानदार और सत्यनिष्ठ व्यक्ति हर प्रकार की उपेक्षा, उपहास व प्रताड़ना झेलते हैं। लोग असत् आचरण को ही सफलता का सन्मार्ग समझ बैठे हैं। यही कारण है कि देश में चारों ओर अज्ञान व अराजकता फैल रही है और विदेशी शक्तियाँ हर प्रकार से हमारी इस कुप्रवृत्ति का लाभ उठाकर सोने की चिड़िया को अपने चंगुल में फँसाने की चालें चल रही हैं।

अभी भी समय है कि हम चेत जायें और सच्चे राष्ट्रीय विद्वानों तथा ब्रह्मनिष्ठ महापुरुषों के द्वारा दिखाये मार्ग का अनुसरण करते हुए राष्ट्र के एवं स्वयं अपने भी स्वाभिमान की रक्षा करें तथा देश को नष्ट होने से बचायें।

वृक्षासन

इस आसन में शरीर का आकार वृक्ष जैसा हो जाता है इसलिए इसे 'वृक्षासन' कहते हैं।

लाभ : इससे एकाग्रता व मानसिक स्थिरता बढ़ती है। पैरों व कंधों की मांसपेशियाँ मजबूत बनती हैं।

विधि : कम्बल या आसन पर दोनों पैर मिलाकर सीधे खड़े हो जायें। दायें पैर को घुटने से मोड़ते हुए उसी पैर के पंजे को बायें पैर की जंघा पर चित्रानुसार लगायें। फिर कोहनियाँ मोड़े बिना दोनों हाथों को सीधा सिर के ऊपर ले जायें और हथेलियों को आपस में मिलाकर नमस्कार की मुद्रा बनायें। दृष्टि सामने रखें। शरीर को अच्छी तरह से ऊपर की ओर खींचें। कुछ समय बाद हाथों व पैरों को सामान्य स्थिति में ले आयें। पैर बदलकर इसी तरह से बायें पैर से भी करें।

विद्यार्थियों की प्रतिभा निखारने का
सुनहरा अवसर
विद्यार्थी अनुष्ठान शिविर
२३ से २९ अक्टूबर

पूज्य बापूजी से प्राप्त सारस्वत्य मंत्र के नियमित जप व अनुष्ठान से असंख्य विद्यार्थियों के जीवन में चमत्कारिक लाभ हुए हैं और उन्होंने सफलता के उच्च शिखरों को छुआ है।

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए आध्यात्मिक स्पंदनों से ओतप्रोत अहमदाबाद आश्रम के पवित्र व सात्त्विक वातावरण में हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी दीपावली के शुभ अवसर पर सारस्वत्य मंत्र के सात दिवसीय अनुष्ठान शिविर का आयोजन किया गया है।

शुल्क : ४७५/- रु. (निवास व भोजन की व्यवस्था के साथ)

आयु मर्यादा : ९ साल से ऊपर के छात्र-छात्राएँ

शिविर की विशेषताएँ :

* विद्यार्थियों के शारीरिक विकास तथा एकाग्रता, स्मरणशक्ति, निर्णयक्षमता आदि में वृद्धि के लिए विभिन्न यौगिक प्रयोग सिखाये जायेंगे।
* परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने हेतु सरल युक्तियाँ बतायी जायेंगी।
* वक्तृत्व, निबंध लेखन आदि स्पर्धाओं का आयोजन, जिनमें विजयी विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया जायेगा।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

बाल संस्कार विभाग, संत श्री आशारामजी आश्रम, अहमदाबाद।

दूरभाष : (०७९) ३९८७७७४९/५०/५१

खेल-खेल में पायें ज्ञान

विद्यार्थियों को गोलाकार में खड़ा करें। कीर्तन चलते ही बच्चे घूमना शुरू करेंगे। कीर्तन बंद होते ही शिक्षक एक संख्या बोलेंगे और विद्यार्थियों को रुककर उस संख्या के अनुरूप क्रिया दर्शानी होगी जो उन्हें पहले से ही बतायी गयी होगी। जैसे - '१' कहने पर ध्यान, '२' पर जप, '३' पर कीर्तन और '४' पर प्राणायाम की क्रिया दर्शाना। गलत क्रिया करनेवाले बच्चे खेल से बाहर होते जायेंगे। जो अंत तक रहेगा वह विजयी होगा।

विद्यार्थी के पास अगर लौकिक विद्या के साथ सद्गुरुप्रदत्त आध्यात्मिक विद्या भी हो तो जीवन में चार चाँद लग जाते हैं।

सब सहते हुए भी संस्कृति-रक्षा में अडिग !

भारतभूमि में अनादिकाल से ज्ञान, योग तथा भक्ति की अमृतधारा बहानेवाले संतों-महापुरुषों की सनातन धर्म एवं संस्कृति के संरक्षण में अहम भूमिका रही है। जब-जब समाज में अशांति, भय, चिंता, द्वेष बढ़ा है, तब-तब संतों ने ही उन बुराइयों को दूर कर समाज को सही राह दिखायी है। संसार को भगवत्प्राप्ति की पाठशाला बतानेवाले ऐसे ही एक सजग संस्कृति प्रहरी थे श्री मध्वाचार्य।

कर्नाटक राज्य के पाजक गाँव में सन् १२३८ में जन्मे आचार्य मध्व बचपन में ही संत अच्युतप्रज्ञ (अच्युतपक्षाचार्यजी) से दीक्षा लेकर उनके चरणों में रहने लगे। उन दिनों भारत के कई राज्यों में इस्लाम अपनी जड़ें जमा चुका था और ईसाई धर्म भी भारत में आ चुका था। चारों तरफ से भारतीय संस्कृति पर आक्रमण हो रहे थे। विदेशी धर्मों के प्रभाव से देशवासियों के मन में एक प्रकार की संदिग्धता घर कर चुकी थी। समाज में नैतिकता, सदाचार और आध्यात्मिकता का लोप हो रहा था।

आचार्य धर्म-प्रचार के कार्य में उतर पड़े। पूरे देश में घूम-घूमकर तत्त्ववाद का प्रचार-प्रसार करने लगे। उनके सत्संग-प्रवचनों में आनेवाले लोग सत्य धर्म, सत्संग, वैदिक धर्म का रसपान करके तृप्त होने लगे। लुप्त हो रही नैतिकता एवं धार्मिक भावनाएँ समाज में फिर से पनपने लगीं, लोगों पर भक्ति का रंग चढ़ने लगा।

समाज में जब भी कोई महापुरुष जागृति लाने का कार्य करते हैं तो उन्हें एक तरफ जनप्रियता तो प्राप्त होती है लेकिन दूसरी तरफ असामाजिक तत्त्वों के विरोध का सामना भी करना पड़ता है। ऐसा होता रहता है। आचार्य मध्व के साथ भी ऐसा ही हुआ।

समाज-विरोधियों द्वारा आचार्य पर उनके द्वारा चलाये जा रहे कार्यों को बंद करने के लिए दबाव दिया गया। समाज की भलाई के लिए अपना अमूल्य समय देकर अथक परिश्रम करके आचार्य ने स्वयं जिन ग्रंथों की रचना की थी, उन हस्तलिखित ग्रंथों की चोरी कर ली गयी। इस पर भी आचार्य अपने धर्म-प्रचार के कार्यों में अडिग रहे तो उनके विरुद्ध अफवाहें फैलाकर लोगों की आस्था तोड़ने के प्रयास चालू हो गये। 'परम्परा से चली आ रही प्रथा को आचार्य मध्व तोड़ रहे हैं, सम्प्रदाय विरोधी बातें कहते हैं'- ऐसा शोर कुछ लोगों ने मचाना शुरू किया। अफवाहों का जब लोगों पर कोई असर नहीं होते दिखा तो दुष्ट लोगों ने हिंसा का मार्ग अपनाया। उनके संन्यास-दंड को तोड़ने का प्रयास किया गया। उस समय के विख्यात मल्ल कोडिंचाडि भाइयों द्वारा आचार्य को मरवा डालने का प्रयत्न हुआ।

हिंसक तरीके भी जब नाकाम रहे तो विधर्मियों ने नीचता की सारी हदें पार कर दीं। जिन संत ने समाज में संयम-सदाचार की महक फैलायी थी, उनके चरित्र के बारे में गंदी अफवाहें फैलाना शुरू कर दिया गया। दुष्ट निंदक निर्दोष संत के निर्मल चरित्र पर कीचड़ उछालने लगे। आचार्य से ईर्ष्या करनेवाले लोगों ने इन बातों को और हवा दी। फिर क्या था, गुमराह लोगों की उँगलियाँ आचार्य की ओर उठने लगीं। लोग तरह-तरह की टिप्पणियाँ करने लगे।

जिन महापुरुषों के संकल्पमात्र से असम्भव कार्य भी सम्भव हो जाते हैं, प्रकृति भी अपने नियम बदल देती है, ऐसे महापुरुष कई बार सहनशीलता की पराकाष्ठा कर देते हैं। मध्वाचार्यजी को सतानेवालों ने कमी नहीं रखी परंतु समर्थ होते हुए भी मध्वाचार्यजी सब कुछ सहते हुए अपने समता के सिंहासन पर अडिग रहे और समाजोत्थान के कार्य करते रहे। आज उनके निंदक किन नरकों में सड़ रहे होंगे हमें पता नहीं लेकिन मध्वाचार्यजी तो आज भी असंख्य लोगों के लिए पूजनीय बने हुए हैं।

संत कँवररामजी, सिंध के सुप्रसिद्ध संत टेऊँरामजी, गुरु नानकजी, संत नरसिंह मेहता, मीराबाई आदि-आदि संतों पर भी दुष्ट लोगों ने अत्याचार करने में कमी नहीं रखी। संत कबीरजी को तो

लिखना पड़ा :

कबिरा निंदक ना मिलो, पापी मिलो हजार ।
एक निंदक के माथे पर, लाख पापिन को भार ॥

जो संतों के निंदक होते हैं, वे भय, शोक एवं अकाल मृत्यु के शिकार हो जाते हैं। वे धनभागी हैं जो निंदकों के चक्कर में नहीं आते ! उनकी चार चीजें बढ़ती हैं : आयु, विद्या, यश और बल।

चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्या यशो बलम् ।

भगवान शिवजी कहते हैं :

धन्या माता पिता धन्यो गोत्रं धन्यं कुलोद्भवः ।
धन्या च वसुधा देवि यत्र स्याद् गुरुभक्तता ॥

'जिसके अंदर गुरुभक्ति हो उसकी माता धन्य है, उसका पिता धन्य है, उसका वंश धन्य है, उसके वंश में जन्म लेनेवाले धन्य हैं, समग्र धरती माता धन्य है।'

(श्रीगुरुगीता : ३.१५०)

निंदक और निगुरे अशांति व नरकों में जाते हैं और सज्जन व सगुरे हर परिस्थिति में सम रहते हुए अपने आत्मस्वरूप में, साक्षी-स्वभाव में मस्त रहते हैं।

★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★

विदेशों में बढ़ी देशी गायों की माँग

भारतीय देशी गायों में अधिक तापमान बर्दाश्त करने की अद्भुत क्षमता है । इनकी रोग-प्रतिरोधक क्षमता, पौष्टिक तत्त्वों की कम जरूरत और रख-रखाव में आसान होने के कारण दुनिया के प्रमुख राष्ट्र इनका आयात कर रहे हैं।

केन्द्र सरकार द्वारा 'राष्ट्रीय गोकुल मिशन' योजना के तहत बनायी गयी गौशालाओं में ६० प्रतिशत देशी दुधारू गायें तथा ४० प्रतिशत बिना दूध देनेवाली गायें रखी जायेंगी । पूज्य बापूजी ने भी सालों पूर्व ऐसी ही पहल करते हुए कत्लखाने ले जायी जा रही, बिल्कुल दूध न देनेवाली हजारों गायों का गौशालाएँ बनाकर संरक्षण-संवर्धन किया है।

ब्रह्मज्ञान का उत्तम अधिकारी कौन ?

वैदिकी सभी उपासनाओं का समन्वय तत्त्वज्ञान में है परंतु तत्त्वज्ञान किसी उपासना-विधि का अंग नहीं। अपनी लौकिक-पारलौकिक कामनाओं की पूर्ति के लिए किसी परोक्ष सत्ता या पदार्थ का आश्रय लेने की जो मूल मानव-प्रवृत्ति है, उसका परिणाम है देवोपासना । देवोपासना का अधिकारी दूसरा है और ब्रह्मज्ञान का दूसरा । ब्रह्मजिज्ञासा उसके हृदय में उदय होती है जो छोटी-छोटी चीजों में सुख नहीं देखता । जिसे अल्प (ब्रह्म-परमात्मा के सिवाय सभी वस्तुएँ, भोग-पदार्थ नाशवान होने से अल्प हैं) से ही वैराग्य है, जो बृहत्तम पदार्थ से ही सुख चाहता है, जो ब्रह्म को ही सुखमात्र देखता है। बृहत्तम पदार्थ का नाम ब्रह्म है। अल्प से वैराग्य हुए बिना ब्रह्मजिज्ञासा नहीं होती जबकि देवता की उपासना अल्प-जिज्ञासा के अंतर्गत ही है।

अल्प में जो आनंद प्रतीत होता है वह आपको पराधीन बनाता है, जड़ बनाता है क्योंकि जड़ के साथ तादात्म्य हुए बिना क्षणिक आनंद की उपलब्धि नहीं होती, वह आपको परिणाम में भी दुःखी बनाता है । आनंदभाव की विरोधी है पराधीनता, वियोगिता; चिद्भाव का विरोधी है जड़त्व, अन्य के साथ तादात्म्य; सत्-भाव की विरोधी है विनाशिता । इसलिए यदि कोई भी मनुष्य अपने आत्मा के अतिरिक्त सुख लेना चाहता है तो वह विनाशी सुख चाहता है, जड़ सुख चाहता है, पराधीन सुख चाहता है। असल में वह दुःख में ही सुख की भ्रांति से पीड़ित है। अतः कर्म और उपासना के सुख से विरक्त होकर ब्रह्मजिज्ञासु को ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति के लिए ही गुरु-शरणागत होना चाहिए।

गुरुमुख से ब्रह्म की जानकारी प्राप्त करने में जिज्ञासु के सामने तीन आश्रय होते हैं : आत्माश्रय, ईश्वराश्रय और साधनाश्रय।

सबको छोड़कर अपने में बैठ जायेंगे तो परमात्मा हमें अपने-आप मिल जायेगा । अर्थात् मन की इधर-उधर की आपाधापी को हटाने के लिए ॐकार का दीर्घ उच्चारण करके शांत होते जायेंगे । ॐ, स्वस्तिक, वृक्ष या आकाश को

योनावृतस्य सीदत। 'हे जीवो ! तुम सत्यस्वरूप परमात्मा की गोद में बैठो। सदा परमात्मा के आश्रय में रहो।' (सामवेद)

एकटक देखते हुए शांत...

शांत... शांत... आनंद... इस तरह अपने-आपमें बैठना - यह **आत्माश्रय** है।

ईश्वर की खूब पूजा-उपासना, भेंट करो तो ईश्वर प्रसन्न होकर हमें अपना ज्ञान दे देंगे - यह **ईश्वराश्रय** है। कोई ऐसा साधन पकड़ें कि उसका स्वाभाविक फल आत्मज्ञान हो - यह **साधनाश्रय** है। जैसे शास्त्रावलम्बन, त्यागावलम्बनरूप समाधि, इष्टावलम्बनरूप उपासना इत्यादि। आत्माश्रय भी किंचित् साधनाश्रय ही है, बस इसमें साधन-क्रिया की दिशा प्रतिलोम है और कर्तृत्व क्षीण है। किंतु आत्माश्रय और साधनाश्रय दोनों में कर्तृत्व-भोक्तृत्व की भ्रांति निवृत्त करने का सामर्थ्य नहीं है। रही इष्टाश्रय से कर्तृत्व-भोक्तृत्व आदि की भ्रांति मिटाने की बात तो इसमें भी परोक्ष देवता के प्रति कर्तृत्व बुद्धि होती है। यह वस्तु के अपरोक्ष साक्षात्कार का मार्ग नहीं है। हाँ, यह मंद अधिकारी का मार्ग है।

सद्गुरु की आज्ञा में रहकर अल्प (भोग-पदार्थ) से वैराग्य को प्राप्त हुआ मनुष्य ब्रह्मज्ञान का उत्तम अधिकारी है। अपनी बुद्धि का आश्रय लेनेवाला ब्रह्मज्ञान का मध्यम अधिकारी है और परोक्ष देवता की बुद्धि का सहारा लेनेवाला ब्रह्मज्ञान का मंद अधिकारी है।

संसार के विषय-विकारों में जो भटक रहे हैं उनसे मंद अधिकारी ठीक, मंद से मध्यम ठीक और उत्तम का तो कहना ही क्या ! यह मिल गया, वह हो गया, ऐसा बन गये... आखिर क्या ? सोने की लंका पानेवाला रावण अथवा सोने के हिरण्यपुर का मालिक हिरण्यकशिपु भी आत्मज्ञान के बिना विफल व दुःखी होकर मर गया। शबरी भीलन, रैदासजी, कबीरजी व अन्य ईश्वराश्रय, आत्माश्रय अथवा ब्रह्मज्ञान का प्रसाद पानेवाले जीवन्मुक्त महापुरुष धन्य-धन्य हो गये ! जैसे मेरे प्रभु पूज्यपाद लीलाशाहजी या और जीवन्मुक्त महापुरुष। अतः हे साधक ! उद्देश्य आत्मसुख, आत्मज्ञान का, आत्मसाक्षात्कार का बनाओ। कब तक देवी-देवताओं से माँग-माँगकर या दुनियावी लोगों से माँग-माँगकर मँगते बने रहोगे ? **हम हैं अपने-आप, हर परिस्थिति के बाप !** ॐ ॐ आनंद... ॐ ॐ प्यारेजी... प्रभुजी... सजग हो जाओ, सावधान हो जाओ ! जगत के भ्रम को पक्का मत होने दो, उसे तोड़ते जाओ। तुम सत् हो, चैतन्य हो फिर चाहे शरीर रेल में, चाहे महल में, चाहे जेल में - क्या फर्क पड़ता है तुम्हारे असली आनंदस्वरूप, साक्षी परमात्म-स्वरूप में !

लक्ष्य न ओझल होने पाये,
कदम मिलाकर चल (ब्रह्मज्ञानी से)।
सफलता तेरे चरण चूमेगी,
आज नहीं तो कल ॥

हिम्मत, साहस, सजगता... ॐ ॐ ॐ... सर्वोपरि आश्रय, सर्वोपरि साधन - ब्रह्मज्ञान, सर्वोपरि उपलब्धि - ब्रह्मसुख, जिस लाभ से बड़ा कोई लाभ नहीं, जिस सुख से बड़ा कोई सुख नहीं, जिसमें स्थित होने से बड़ी विकट परिस्थिति भी कोई मायने नहीं रखती, ऐसे आत्मस्वरूप में जगे हुए महापुरुष का दीदार करके देवता भी अपना भाग्य बना लेते हैं।

- पूज्य बापूजी

★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★

स्वास्थ्य रक्षक सरल प्रयोग

* हल्दी १०० ग्राम, मेथीदाना १०० ग्राम और आँवला २०० ग्राम - तीनों को पीसकर काँच की शीशी में भरकर रखें। ५-५ ग्राम मिश्रण सुबह-शाम गुनगुने पानी से लेने से कंधे, घुटने, कमर एवं जोड़ों के दर्द में आराम मिलता है।

* अजवायन और काला नमक समभाग बारीक पीसकर रखें। पेट में गैस अथवा दर्द होने पर ३ ग्राम मिश्रण फाँक के ऊपर से गुनगुना पानी पीने से राहत मिलती है।

* १ चम्मच अरंडी के तेल में १ चम्मच ताजा दूध मिलाकर पीने से पेट में वायु का गोला उठने से होनेवाले भयंकर दर्द में राहत मिलती है।

* नींबू के छिलके पर २ बूँद सरसों का तेल डालकर दाँतों व मसूड़ों पर घिसने से दाँत मजबूत व चमकीले बने रहते हैं और मसूड़े स्वस्थ बनते हैं।

सिरदर्द दूर करने हेतु उपाय

११ सफेद मिर्च व १० ग्राम मिश्री को पीसकर प्रातः लगभग ४ बजे २५ ग्राम दूध की मलाई में मिला के चाट लें और एकाध घंटा और सो जायें।

इस प्रयोग को केवल ७ दिन करने से आधासीसी के दर्द व दिन निकलने पर शुरू होनेवाले सिरदर्द में अथवा कैसा भी सिरदर्द हो, आराम मिलता है।

जब आत्मा का असली रस मिल जाता है, तब नकली रस छूटता है। असली रस की उपलब्धि सत्संग से ही सम्भव है।

ठंडे तेल से सावधान !

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय (बीएचयू) अस्पताल में हुए शोध से यह बात सामने आयी है कि सिर में ठंडा तेल लगाने की आदत से आँखों की रोशनी जा सकती है। सिरदर्द के ३०० मरीजों पर हुए शोध में पाया गया कि ठंडा तेल दिमाग की नसों को गलाकर लोगों को अंधा बना रहा है। ये सभी पाँच सालों से ठंडा तेल लगा रहे थे। इनमें ३० प्रतिशत लोगों को मिर्गी के दौरे आने लगे हैं। बाकी लोगों का माइग्रेन तेजी से बढ़ रहा है।

ज्यादा नमक हो सकता है जानलेवा

'न्यू इंग्लैंड जर्नल ऑफ मेडिसिन' में प्रकाशित शोध के अनुसार ज्यादा नमक खाने से उपजे हृदयरोगों से वर्ष २०१० में विश्व में १६.५ लाख लोगों की मृत्यु हुई। ज्यादा नमक खाना तम्बाकू सेवन करने जैसा है। शोध में बताया गया कि एक व्यक्ति को प्रतिदिन सिर्फ दो ग्राम नमक ही खाना चाहिए लेकिन भारतीय औसतन ७.६ ग्राम नमक खाते हैं। ज्यादा नमक खाने से हाई ब्लडप्रेशर, हृदयरोग के अलावा और भी कई सारी बीमारियाँ होती हैं। नमक और शक्कर को सफेद जहर कहा गया है। अतः सभी आश्रमों के रसोईघरों में, साधकों के घरों में 'शक्कर-नमक : कितने खतरनाक !' वाला लेख लगा देना चाहिए।

(लेख हेतु देखें आश्रम से प्रकाशित पुस्तक 'आरोग्यनिधि' भाग-१, पृष्ठ १३१)

एक्यूप्रेशर के दो उपयोगी बिंदु

सूर्यबिंदु : सूर्यबिंदु छाती के पर्दे (डायाफ्राम) के नीचे आये हुए समस्त अवयवों का संचालन करता है। नाभि खिसक जाने पर अथवा डायाफ्राम के नीचे के किसी भी अवयव के ठीक से कार्य न करने पर सूर्यबिंदु पर दबाव डालने से लाभ होता है।

शक्तिबिंदु : जब बहुत थकान हो या रात्रि को नींद न आयी हो, तब इस बिंदु को दबाने से लाभ होगा।

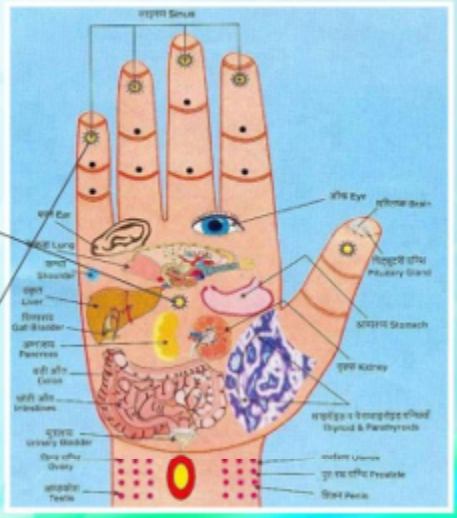

अर्षा नः सोम। 'हे आनंदप्रद प्रभो ! हमें प्राप्त होइये।' (सामवेद)

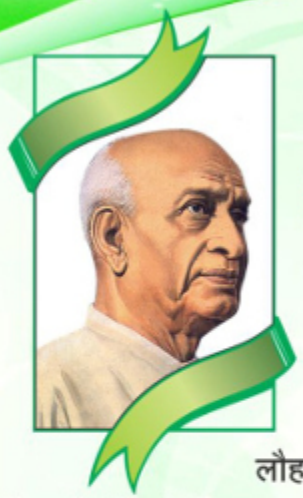

ऐसा लौह जो परदुःख में पिघलता था

(सरदार पटेल जयंती : ३१ अक्टूबर)

लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल क्रांतिकारी, सिद्धांतनिष्ठ, सच्चे राजनीतिज्ञ होने के साथ ही सच्चाई, निर्भयता, परोपकारिता और सरलता जैसे सद्गुणों के भी धनी थे।

एक बार गोधरा (गुजरात) में प्लेग की महामारी भयंकर रूप से फैल गयी। ऐसे में अपनी परवाह किये बिना सरदार पटेल पीड़ितों की सेवा में लग गये।

सतत मरीजों के सम्पर्क में रहने से सरदार पटेल को भी प्लेग की बीमारी ने पकड़ लिया परंतु ईश्वर के नाते असहायों की सेवा से उनके अंदर जो रस पैदा हुआ उससे उनका चित्त तो पावन हुआ ही, साथ ही आत्मविश्वास व आत्मबल से उनका शरीर भी शीघ्र स्वस्थ हो गया। प्लेग से प्रभावित अपनी पत्नी को उपचार के लिए उन्हें मुंबई भेजना पड़ा।

एक दिन सरदार पटेल किसी मुकदमे की पैरवी कर रहे थे, तभी उनके पास उनकी पत्नी के निधन का तार आया। उन्होंने तार पढ़ा और १-२ सेकंड के लिए मौन हो गये। किंतु क्षणभर में ही वे अपनी व्यथा के सागर पर नियंत्रण कर पूर्ववत् अपने काम में जुट गये। यह है सुने हुए सत्संग का महत्त्व ! 'अनुकूलता-प्रतिकूलता आ-आकर चली जाती हैं, उनको जाननेवाला साक्षी चैतन्य अपना।' - ऐसे अपने अमर-स्वभाव के सत्संग के प्रभाव से स्वस्थ होकर वे पुनः जिरह करने लगे। जिरह समाप्त होने के बाद जब मित्रों ने पूछा कि ''तार में क्या था ?''

बोले : ''मणि (उनकी बेटी) की माँ का देहावसान हो गया है।''

सभी हैरानी से उनकी तरफ देखने लगे।

तब उन्होंने कहा : ''पत्नी की मृत्यु के आघात से मैं अपना कर्तव्य कैसे छोड़ देता ! यदि मैं दृढ़तापूर्वक जिरह नहीं करता तो अभियुक्त को फाँसी की सजा भी हो सकती थी।''

धन्य है उनकी कर्तव्यनिष्ठा ! तभी तो वे टुकड़ों में बँटे भारत को एक सूत्र में पिरोने का चुनौतीपूर्ण दुरूह कार्य कर सके थे। देश को आजाद कराने में भी इन लौहपुरुष ने अहम भूमिका निभायी थी।

आंदोलनों के चलते उन्हें कई बार जेल में डाला गया तथा अगणित यातनाएँ दी गयीं। एक बार जब वे लम्बी सजा काटकर कारागृह से बाहर आये तो अस्वस्थ होने से बहुत पीड़ा में थे। चिकित्सकों ने तुरंत शल्यचिकित्सा (ऑपरेशन) का परामर्श दिया और उसकी तैयारी होने लगी। लेकिन जैसे ही उन्हें बोरसद (जि. आणंद, गुजरात) में फैली महामारी की सूचना मिली तो परपीड़ा के आगे अपनी पीड़ा भूलकर वे बोरसद के लिए निकल पड़े।

सरदार पटेलजी के जीवन में ऐसे कई प्रसंग देखने को मिलते हैं जो हमें निजी स्वार्थों से ऊपर उठकर परहित के लिए 'बहुजनहिताय-बहुजनसुखाय' जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं।

ऐसे देशभक्त, कर्तव्यपरायण सच्चे योद्धाओं से ही देश की उन्नति सम्भव है।

★★★

पृष्ठ ५ का शेष...

''आप दीपावली के दिन अपने घर में दीये जलाओ लेकिन साथ में किसी गरीब के घर में भी दीया जला आओ। वहाँ भी कुछ मिठाई, फल, कपड़े बाँट के आओ, उनसे स्नेह के दो वचन कहो और 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' के वैदिक ज्ञान-प्रकाश से जीवन को जगमगाओ।''

इस पर्व पर देशभर के संत श्री आशारामजी आश्रमों, सेवा समितियों, युवा सेवा संघों, महिला उत्थान मंडलों तथा साधकों द्वारा गरीब व आदिवासी क्षेत्रों में किये जानेवाले विशाल भंडारे,

मिठाई व जीवनोपयोगी वस्तुओं का वितरण आदि सेवाकार्य पूज्यश्री के उपरोक्त वचनों को साकार रूप देने का ही एक प्रयास है।

पूज्य बापूजी दीपावली का आध्यात्मिक संदेश देते हुए कहते हैं : ''दीपावली का महापर्व सभीके जीवन में नया उत्साह, उल्लास, प्रसन्नता तथा प्रकाश बिखेरता ही है, साथ ही यह प्रेरणा भी देता है कि अज्ञानरूपी अंधकार में भटकने की जगह अपने जीवन में ज्ञान का प्रकाश ले आओ। दीपावली के पर्व पर घर में और बाहर तो दीपमालाओं का प्रकाश अवश्य करो, साथ-ही-साथ अपने हृदय में भी भगवदीय ज्ञान का आलोक कर दो। जो प्रकाशों-का-प्रकाश है उस दिव्य परमात्म-प्रकाश का चिंतन करो।''

पृष्ठ ६ का शेष...

जाऊँगा।'

दोपहर का समय था। गुरुजी भोजन कर रहे थे। उस समय आसपास कोई चेला नहीं था। अतः उस ब्राह्मण ने मौका देखकर जोर से झपट्टा मारा और गुरु की जटा में से बाल ले भागा।

गुरु ने कहा : ''बेटा तुझे बाल से बहुत प्रेम है न ! तो जा, भगवान की दया से तुझे बाल-ही-बाल मिलेंगे।''

अब वह युवक स्वप्न में भी बाल-ही-बाल देखने लगा। भोजन में भी बाल आ जाय, जो अशुद्ध माना जाता है। देवशर्मा को गुरु ने प्रसन्न होकर एक बाल दिया तो उसका धंधा चमक उठा जबकि यह ब्राह्मण बाल छीनकर लाया तो हर जगह उसे बाल-ही-बाल मिलने लगे।

महत्त्व वस्तु का नहीं वरन् गुरु की प्रसन्नता का है। गुरु संकल्प करके जो प्रसाद देते हैं, वह सामान्य दिखती वस्तु भी बहुत बड़ा काम कर जाती है, फिर वह प्रसाद चाहे कोई वस्तु हो, चाहे कोई उपदेशामृत हो। अतः सच्चे गुरुओं के प्रसाद का सदैव आदर करो।

- पूज्य बापूजी

भगवन्नाम-आश्रय के लाभ

- पूज्य बापूजी

जो लोग भगवन्नाम का आश्रय लेते हैं उनका दुःख तो मिटता है, दुःखों का कारण पाप भी मिटता है। तीसरा लाभ होता है संसारी वासना मिटती है और ईश्वर की प्रीति जगती है। चौथा लाभ होता है चित्त की चंचलता, मनोराज्य शांत होता है और मन की मधुरता जगती है। पाँचवाँ फायदा होता है कि अंतर्यामी परमात्मा अंतर में सत्प्रेरणा, सत्शांति, सन्माधुर्य देते हैं।

तमिद्वर्धन्तु नो गिरः। 'हमारी वाणियाँ प्रभु का ही गुणगान करें।' (सामवेद)

कल्पना तारक और मारक

'हम सिंधी हैं', 'हम गुजराती हैं', 'हम जैन हैं' – ये सब कल्पनाएँ हैं। 'हम मनुष्य हैं' – यह भी कल्पना है। इन सब कल्पनाओं को काटने का नाम है – 'अहं ब्रह्मास्मि'। ये छोटी-छोटी कल्पनाएँ कट गयीं तो 'अहं ब्रह्मास्मि' की कल्पना 'कल्पना' नहीं रहती, अपना ब्रह्मत्व छलकने लगता है।

जो 'देह मैं हूँ' ऐसा सदैव चिंतन करता है, वह अभागा देहधारी रहता है। जो मुश्किल का चिंतन करता है, उसके ऊपर मुसीबतें और मुश्किलें ही आती हैं लेकिन जो गुलाब के फूल की नाईं मुस्कराता रहता है, आनंदित रहता है और 'मैं साक्षी हूँ, चैतन्य हूँ, आनंदस्वरूप हूँ, ब्रह्म हूँ, आत्मा हूँ' – ऐसा चिंतन करता है, वह उसी सच्चिदानंदस्वरूप में जाग जाता है, मुक्त हो जाता है। जीवन की कोई भी परिस्थिति का प्रभाव उस पर नहीं पड़ता। वह खिन्न दिखते हुए भी खिन्नता का साक्षी है, रुष्ट होते हुए भी रुष्टता का साक्षी है। जिसको इसी जन्म में पूर्णता का अनुभव करना होता है, वह 'श्री योगवासिष्ठ' व वेदांत शास्त्रों का नित्य श्रवण या अध्ययन, मनन व निदिध्यासन करता है और जीवन्मुक्त सद्गुरुओं की कृपा का अनुभव कर लेता है।

पूरे हैं वे मर्द जो हर हाल में खुश हैं...

कोई भी परिस्थिति उनको प्रभावित नहीं कर सकती। वे आत्मज्ञान में जगे जीवन्मुक्त महापुरुष 'देह छतां जेनी दशा वर्ते देहातीत...' देह में होते हुए भी अपने को विदेही, व्यापक स्वरूप जानते हैं। ऐसे ब्रह्मज्ञानियों की महिमा लाबयान है। 'मैं दुःखी हूँ, ऐसा है... वैसा है – यह मन की कल्पना व बुद्धि की बेवकूफी का विषय है। मन व बुद्धि की कल्पना को भी मैं जानता हूँ। मैं विभु हूँ, व्यापक हूँ... ॐ आनंद... ॐ ॐ...' का गीत जो गाता है, वह शिवस्वरूप हो जाता है।

व्यक्ति जैसा चिंतन करता है न, वैसा ही हो जाता है। हम हैं तो चैतन्य लेकिन चिंतन किया जीवत्व का तो जीव हो गये। चिंतन करते-करते दृढ़ हो गया। नाम का भी तो चिंतन दृढ़ हो गया, 'मलूकचंद, गणेश भाई...' ये भी तो सब कल्पना हैं!

तुम्हारी कल्पना जहाँ से उठती है, वह है 'ब्रह्म'। 'मैं गुजराती हूँ, मैं दुःखी हूँ, यह मुश्किल है, मैं परेशान हूँ, मैं पापी हूँ...' – इन कल्पनाओं की अपेक्षा 'मैं ब्रह्म हूँ' यह कल्पना करो। शुरुआत में ब्रह्म की भी भावना करनी पड़ती है, कल्पना करनी पड़ती है, इसमें कोई दो मत नहीं लेकिन वह कल्पना तुम्हें जहाँ से कल्पना उठती है, वहाँ पहुँचा देगी।

– पूज्य बापूजी

★★★

सांस्कृतिक जागरण का शंखनाद : राष्ट्र-जागृति यात्राएँ

हरियाणा

महाराष्ट्र

राजस्थान

मध्य प्रदेश

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

आश्रम, समितियाँ एवं साधक परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

RNI No. 66693/97
RNP No. GAMC-1253-A/2012-14
Issued by SSP-AHD
Valid upto 31-12-2014
LWPP No. CPMG/GJ/45/2014
(Issued by CPMG GUJ. valid upto 31-12-2014)
Permitted to Post at AHD-PSO
from 18th to 25th of E.M.
Publishing on 15th of every month

बाढ़ पीड़ितों को राहत-सामग्री पहुँचाते पूज्य बापूजी के साधक

जम्मू

बड़ौदा

सांस्कृतिक जागरण का शंखनाद

राष्ट्र-जागृति यात्राएँ

उत्तर प्रदेश

गुजरात

आवरण
पृष्ठ ३ भी देखें

पर्यावरण सुरक्षा अभियान : विभिन्न स्थानों पर तुलसी, पीपल, आँवला आदि वृक्षों का रोपण किया गया।

वर्ष २०१५ के वॉल कैलेंडर अब दो रूपों में...

पूज्य बापूजी के सत्प्रेरणा व शांतिप्रदायक एवं चित्ताकर्षक श्रीचित्रों तथा अनमोल आशीर्वचनों से सुसज्जित वर्ष २०१५ के वॉल कैलेंडर उपलब्ध हैं।

२५० या इससे ज्यादा कैलेंडर का ऑर्डर देने पर आप अपना नाम, फर्म, दुकान आदि का नाम-पता छपवा सकते हैं।
स्वयं के साथ अपने मित्रों, परिचितों को भी अवश्य लाभ दिलायें। सम्पर्क : अहमदाबाद मुख्यालय - (०७९) ३९८७७७३२

सभी संत श्री आशारामजी आश्रमों, श्री योग वेदांत सेवा समितियों एवं साधक-परिवारों के सेवाकेन्द्रों पर उपलब्ध।